| | |
|---|---|
| | भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश् वर<br>**Indian Institute of Technology Bhubaneswar** |

## प्रेस विज्ञप्ति

# आईआईटी भुवनेश्वर और भक्तिवेदांत अनुसंधान केंद्र ने अंतःविषयक अनुसंधान और भारतीय ज्ञान प्रणालियों को बढ़ावा देने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

**भुवनेश्वर, 20 मार्च 2026:** भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर ने भारतीय ज्ञान प्रणालियों, दर्शनशास्त्र, डिजिटल मानविकी और अंतःविषयक अनुसंधान के क्षेत्रों में अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए भक्तिवेदांत अनुसंधान केंद्र (बीआरसी), कोलकाता के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। इस एमओयू पर 19 मार्च 2026 को आईआईटी भुवनेश्वर के डीन (प्रायोजित अनुसंधान एवं औद्योगिक परामर्श) प्रो. दिनकर पसला और भक्तिवेदांत अनुसंधान केंद्र के डीन अकादमिक एवं न्यासी डॉ. सुमंता रुद्र ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अक्षय कुमार रथ, एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. नरेश चंद्र साहू और उप रजिस्ट्रार (सतत शिक्षा, पूर्व छात्र, कॉर्पोरेट एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध) श्री प्रदीप कुमार साहू उपस्थित थे।

यह समझौता ज्ञापन दोनों संस्थानों के बीच शिक्षा, अनुसंधान और ज्ञान प्रसार को बढ़ावा देने के लिए उनकी पूरक शक्तियों का लाभ उठाने की साझा प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

इस सहयोग के तहत, आईआईटी भुवनेश्वर और बीआरसी संयुक्त रूप से कई शैक्षणिक और अनुसंधान पहलों को अंजाम देंगे। इनमें सम्मेलन, कार्यशालाएं, सेमिनार, व्याख्यान श्रृंखला और जनसंपर्क कार्यक्रम शामिल हैं। यह साझेदारी संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं, सहयोगी प्रकाशनों और मानविकी, सामाजिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने वाले अंतःविषयक शोध के विकास को भी बढ़ावा देगी।

इस समझौता ज्ञापन का एक प्रमुख उद्देश्य डिजिटल मानविकी और पांडुलिपि अध्ययन को बढ़ावा देना है, जिसमें डिजिटलीकरण, पाठ्य विश्लेषण और डिजिटल अनुसंधान उपकरण और भंडार बनाने के प्रयास शामिल हैं।

इस अवसर पर बोलते हुए प्रोफेसर पासला ने कहा: "इस सहयोग का उद्देश्य विद्वानों के आदान-प्रदान और क्षमता निर्माण को मजबूत करना है, साथ ही भारतीय ज्ञान परंपराओं, नैतिकता, स्थिरता और सभ्यतागत अध्ययन पर बढ़ते वैश्विक विमर्श में योगदान देना है।"

बीआरसी के डीन (अकादमिक) डॉ. सुमंता रुद्र ने कहा कि यह सहयोग भारतीय ज्ञान प्रणाली को महत्वपूर्ण रूप से मजबूत करेगा, और दोनों संस्थान भविष्य में सार्थक योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

यह साझेदारी पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को समकालीन शैक्षणिक और तकनीकी ढांचों से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो अंतःविषय उत्कृष्टता और सांस्कृतिक विद्वता के प्रति आईआईटी भुवनेश्वर की प्रतिबद्धता को मजबूत करती है।

------------------